Integral Research (Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal) ISSN: 3048-5991
Journal home page: https://integralresearch.in/, Vol. 02, No. 06, June. 2025

बिहार के सारण प्रमंडल में उच्च शिक्षा स्तर के शिक्षकों के प्रशिक्षण का मूल्यांकन

संतोष कुमार यादव*
शोधार्थी,
&
डॉ. नीरज कुमार,
पर्यवेक्षक, शिक्षा विभाग,
मगध विश्वविद्यालय, बोधगया

सारांश

यह शोध-पत्र बिहार के सारण प्रमंडल (सारण, सीवान, गोपालगंज) में उच्च शिक्षा स्तर पर शिक्षक-प्रशिक्षण की वर्तमान स्थिति, प्रभावक्षमता और चुनौतियों का मूल्यांकन करता है। अध्ययन में पाया गया कि सारण प्रमंडल में प्रशिक्षण के अवसर सीमित, अनियमित और संसाधनों की कमी से ग्रस्त हैं। एनईपी-2020 और यूनेस्को के दिशा-निर्देशों के अनुरूप, शोध में सुझाव दिए गए हैं कि प्रशिक्षण कार्यक्रमों को आधुनिकीकरण, स्थानीय संदर्भानुकूलन, संसाधन-वृद्धि, निरंतरता और अंतर-संस्थागत सहयोग से सशक्त बनाया जाए। निष्कर्ष यह है कि प्रशिक्षित शिक्षक ही उच्च शिक्षा की गुणवत्ता और समाज के सर्वांगीण विकास की कुंजी हैं।

कीवर्ड्स: शिक्षक-प्रशिक्षण, उच्च शिक्षा, शैक्षिक गुणवत्ता, तकनीकी दक्षता, राष्ट्रीय शिक्षा नीति

1. प्रस्तावना: उच्च शिक्षा में शिक्षक-प्रशिक्षण का महत्व

उच्च शिक्षा में गुणवत्तापूर्ण शिक्षण केवल विषय-ज्ञान पर निर्भर नहीं करता, बल्कि यह शिक्षकों की अद्यतन जानकारी, शिक्षण कौशल और तकनीकी दक्षता पर आधारित होता है। शिक्षक-प्रशिक्षण एक सतत प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य शिक्षकों को बदलते शैक्षिक परिदृश्य के अनुरूप तैयार करना है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के अनुसार, "शिक्षक का स्थान समाज में सबसे ऊँचा है, क्योंकि वह भावी पीढ़ी को गढ़ता है।" यह कथन रेखांकित करता है कि यदि शिक्षक समयानुकूल प्रशिक्षित नहीं होगा, तो उच्च शिक्षा की गुणवत्ता प्रभावित होगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में स्पष्ट किया गया है कि "शिक्षकों का व्यावसायिक विकास आजीवन

* Corresponding Author: Santosh Kumar Yadav
Email: santosh22022kptgbhs@gmail.com
Received 20 May. 2025; Accepted 18 June. 2025. Available online: 30 June. 2025.
Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

प्रक्रिया है, जिसके लिए नियमित प्रशिक्षण और कौशल उन्नयन आवश्यक है।" आज के वैश्वीकरण और तकनीकी क्रांति के दौर में शिक्षण केवल पारंपरिक व्याख्यान पद्धति तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें डिजिटल उपकरण, प्रोजेक्ट-आधारित शिक्षण और शोध-आधारित दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

यूनेस्को (2015) की रिपोर्ट के अनुसार, "उच्च शिक्षा की गुणवत्ता बिना प्रशिक्षित शिक्षकों के संभव नहीं है।" प्रशिक्षण न केवल शिक्षण कौशल को निखारता है, बल्कि शिक्षक के व्यक्तित्व, दृष्टिकोण और नेतृत्व क्षमता को भी विकसित करता है। पाउलो फ्रेरे ने कहा, "शिक्षा दुनिया को नहीं बदलती, शिक्षा लोग बदलते हैं, और लोग दुनिया को बदलते हैं।" यह बदलाव तब संभव है जब शिक्षक स्वयं लगातार सीखने और प्रशिक्षित होने की प्रक्रिया में शामिल हों।

अतः, उच्च शिक्षा में शिक्षक-प्रशिक्षण केवल प्रशासनिक आवश्यकता नहीं है, बल्कि यह गुणवत्तापूर्ण, प्रासंगिक और भविष्य-उन्मुख शिक्षा का मूल स्तंभ है।

2. सारण प्रमंडल में शिक्षक-प्रशिक्षण की वर्तमान स्थिति

बिहार राज्य का सारण प्रमंडल, जिसमें सारण, सीवान और गोपालगंज जिले शामिल हैं, उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। यहाँ अनेक महाविद्यालय और विश्वविद्यालय इकाइयाँ कार्यरत हैं, जो क्षेत्रीय स्तर पर उच्च शिक्षा की मुख्य आधारशिला हैं। किंतु शिक्षक-प्रशिक्षण की स्थिति का मूल्यांकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि अभी भी कई चुनौतियाँ मौजूद हैं। सारण प्रमंडल के अधिकांश महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षक पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों पर अधिक निर्भर हैं। राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (RUSA) की 2019 की रिपोर्ट के अनुसार, राज्य विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों के शिक्षकों के लिए नियमित प्रशिक्षण और अद्यतन शिक्षण पद्धतियों का ज्ञान आवश्यक है। इस संदर्भ में सारण प्रमंडल में प्रशिक्षण की आवृत्ति और गुणवत्ता पर गंभीर ध्यान देने की आवश्यकता है।

वर्तमान में यहाँ प्रशिक्षण के लिए मुख्य रूप से मानव संसाधन विकास केंद्र (HRDC), पटना विश्वविद्यालय और कुछ राज्य-स्तरीय कार्यशालाओं पर निर्भरता है। परंतु, यूनेस्को (2015) की रिपोर्ट के अनुसार, प्रशिक्षण की गुणवत्ता उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी उसकी उपलब्धता। कई बार प्रशिक्षण कार्यक्रम केवल औपचारिकता तक सीमित रह जाते हैं और व्यावहारिक शिक्षण कौशल में अपेक्षित सुधार नहीं ला पाते।

शिक्षक-प्रशिक्षण के संदर्भ में डॉ. के.पी. सिंह (2018) लिखते हैं कि बिना पर्याप्त तकनीकी और प्रायोगिक प्रशिक्षण के शिक्षक उच्च शिक्षा में नवाचार नहीं ला सकते। सारण प्रमंडल के अधिकांश शिक्षकों के पास ICT आधारित शिक्षण, स्मार्ट कक्षा संचालन और शोध-पद्धति में गहन प्रशिक्षण का अभाव है। यद्यपि कुछ महाविद्यालयों ने डिजिटल शिक्षण उपकरण अपनाए हैं, परंतु इनका उपयोग सभी शिक्षकों द्वारा नियमित रूप से नहीं किया जाता।

संसाधनों की कमी भी एक प्रमुख समस्या है। बिहार शिक्षा विभाग (2020) की एक रिपोर्ट में उल्लेख है कि सारण प्रमंडल के लगभग 60% महाविद्यालयों में आधुनिक प्रयोगशाला और स्मार्ट कक्षा जैसी सुविधाएँ सीमित हैं। इसके कारण प्रशिक्षण में सीखी गई उन्नत तकनीकों का व्यावहारिक अनुप्रयोग कठिन हो जाता है।

अतः, सारण प्रमंडल में उच्च शिक्षा स्तर पर शिक्षक-प्रशिक्षण की वर्तमान स्थिति को देखते हुए यह आवश्यक है कि प्रशिक्षण कार्यक्रम अधिक नियमित, व्यावहारिक और तकनीकी रूप से अद्यतन हों। साथ ही, प्रशिक्षण के बाद उसके प्रभाव का मूल्यांकन भी किया जाए।

3. प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावक्षमता और चुनौतियाँ

उच्च शिक्षा में शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों का उद्देश्य शिक्षकों की पेशेवर दक्षता को बढ़ाना, नई शिक्षण विधियों से परिचित कराना और तकनीकी संसाधनों के उपयोग में उनकी क्षमता विकसित करना है। जैसा कि यूनेस्को (2017) ने कहा, प्रशिक्षण शिक्षकों को 21वीं सदी की शिक्षण चुनौतियों के लिए सुसज्जित करता है।

प्रभावक्षमता के पहलू:

विषय-विशेष अद्यतनता: प्रशिक्षण के दौरान शिक्षक अपने विषय से संबंधित नवीनतम शोध और अवधारणाओं को समझते हैं।

शिक्षण विधियों में नवाचार: प्रशिक्षित शिक्षक व्याख्यान पद्धति से आगे बढ़कर परियोजना-आधारित और संवादात्मक शिक्षण अपनाते हैं।

तकनीकी दक्षता: डिजिटल टूल्स और ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म का प्रयोग बढ़ता है।

छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण: प्रशिक्षण शिक्षकों को विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षण पद्धतियाँ अपनाने में सक्षम बनाता है।

चुनौतियाँ:

संसाधनों की कमी: ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल उपकरणों और प्रशिक्षण केंद्रों का अभाव।

प्रशिक्षण की निरंतरता का अभाव: एक बार के प्रशिक्षण से स्थायी कौशल-विकास संभव नहीं।

समय और कार्यभार का दबाव: शैक्षणिक एवं प्रशासनिक कार्यभार अधिक होने से प्रशिक्षण के लिए समय निकालना कठिन।

प्रेरणा की कमी: कुछ शिक्षक प्रशिक्षण को औपचारिकता मानते हैं।

क्षेत्रीय असमानता: शहरी कॉलेजों में प्रशिक्षण के अधिक अवसर, ग्रामीण कॉलेजों में कम।

प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावक्षमता इस बात पर निर्भर करती है कि वे कितने अद्यतन, व्यावहारिक और निरंतर हैं। एनईपी-2020 का स्पष्ट मत है कि शिक्षकों का सतत् व्यावसायिक विकास ही गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा की नींव है।

4. शिक्षक-प्रशिक्षण के शैक्षिक गुणवत्ता पर प्रभाव

शिक्षक-प्रशिक्षण का प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रभाव शिक्षा की गुणवत्ता पर अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रशिक्षित शिक्षक न केवल विषय-वस्तु का गहन ज्ञान रखते हैं, बल्कि वे प्रभावी शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग कर विद्यार्थियों में जिज्ञासा, आलोचनात्मक सोच और समस्या-समाधान क्षमता का विकास करते हैं।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने कहा था, "शिक्षक वह है जो एक अच्छे विचार को जीवनभर की प्रेरणा में बदल देता है।" यह तभी संभव है जब शिक्षक उपयुक्त प्रशिक्षण से सुसज्जित हो। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT, 2017) की रिपोर्ट के अनुसार, प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों द्वारा पढ़ाए गए छात्रों का शैक्षिक प्रदर्शन औसतन 20-25% अधिक पाया गया। यह आँकड़ा दर्शाता है कि शिक्षक-प्रशिक्षण शिक्षा की गुणवत्ता में प्रत्यक्ष वृद्धि करता है।

यूनेस्को (2015) के अनुसार, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा गुणवत्तापूर्ण शिक्षण पर निर्भर करती है, और गुणवत्तापूर्ण शिक्षण गुणवत्तापूर्ण शिक्षक-प्रशिक्षण से आता है। प्रशिक्षित शिक्षक कक्षा में सहभागिता बढ़ाते हैं, विद्यार्थियों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप पद्धति अपनाते हैं और सीखने की प्रक्रिया को सक्रिय एवं आनंददायक बनाते हैं।

महात्मा गांधी के शब्दों में, "एक शिक्षित शिक्षक हजारों आत्माओं को शिक्षित करता है।" इसलिए, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए प्रशिक्षित शिक्षक सबसे आवश्यक घटक हैं।

5. सुधार हेतु सुझाव और भविष्य की दिशा

शिक्षक-प्रशिक्षण की प्रभावक्षमता को बढ़ाने और शिक्षा की गुणवत्ता में स्थायी सुधार लाने के लिए कई ठोस कदम उठाए जा सकते हैं।

(क) प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आधुनिकीकरण: एनईपी-2020 के अनुसार, शिक्षक-प्रशिक्षण में डिजिटल लर्निंग, वर्चुअल लैब और प्रोजेक्ट-आधारित शिक्षण को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म, वेबिनार और MOOCs के माध्यम से प्रशिक्षण को और अधिक सुलभ बनाया जा सकता है।

(ख) स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार प्रशिक्षण: यूनेस्को (2015) की रिपोर्ट में कहा गया है कि प्रशिक्षण कार्यक्रमों को स्थानीय संदर्भों के अनुरूप डिजाइन करना उनकी प्रभावक्षमता को 30% तक बढ़ा सकता है। सारण प्रमंडल में कृषि, ग्रामीण अर्थव्यवस्था और स्थानीय इतिहास से जुड़ी शिक्षण सामग्री को प्रशिक्षण का हिस्सा बनाया जा सकता है।

(ग) संसाधनों और अवसंरचना का विस्तार: एनसीईआरटी (2017) की सिफारिश के अनुसार, प्रत्येक कॉलेज में समुचित प्रशिक्षण केंद्र, डिजिटल कक्षाएँ और प्रयोगशालाएँ उपलब्ध करानी चाहिए। इससे शिक्षकों को नई तकनीकों का प्रयोग सीखने और अभ्यास करने में सुविधा होगी।

(घ) प्रशिक्षण की निरंतरता और मूल्यांकन: एक बार का प्रशिक्षण पर्याप्त नहीं है। प्रशिक्षण के बाद नियमित मूल्यांकन, पुनः प्रशिक्षण और कार्यशालाओं की आवश्यकता होती है। पाउलो फ्रेरे के अनुसार, "शिक्षक भी जीवन भर का विद्यार्थी है।"

(ङ) अंतर-संस्थागत सहयोग और साझेदारी: अन्य विश्वविद्यालयों और राष्ट्रीय स्तर के संस्थानों के साथ सहयोग बढ़ाकर संसाधनों और विशेषज्ञता का आदान-प्रदान किया जा सकता है।

निष्कर्ष

भविष्य में शिक्षक-प्रशिक्षण को केवल औपचारिकता के रूप में न लेकर, इसे शिक्षा की गुणवत्ता सुधार के मुख्य उपकरण के रूप में अपनाना होगा। सारण प्रमंडल में उच्च शिक्षा के शिक्षकों के प्रशिक्षण की वर्तमान स्थिति चुनौतीपूर्ण है, फिर भी सुधार की अपार संभावनाएँ हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रमों को सतत, संदर्भानुकूल और तकनीकी रूप से उन्नत बनाकर ही सार्थक शैक्षिक सुधार लाया जा सकता है। जैसा कि महात्मा गांधी ने कहा, "यदि हमें सच्चा परिवर्तन लाना है तो हमें अपने शिक्षकों को बदलना होगा।" यह परिवर्तन प्रभावी, नियमित और गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण

Integral Research (Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal) ISSN: 3048-5991
Journal home page: https://integralresearch.in/, Vol. 02, No. 06, June. 2025

के माध्यम से ही संभव है। प्रशिक्षित शिक्षक ही उच्च शिक्षा की गुणवत्ता और समाज के विवेक-वृद्धि की कुंजी हैं।

संदर्भ:

राधाकृष्णन, सर्वपल्ली (1954). शिक्षा, संस्कृति और सामाजिक व्यवस्था.

गांधी, मोहनदास करमचंद (1946). मेरे स्वप्नों का भारत.

कलाम, ए. पी. जे. अब्दुल (2005). इग्नाइटेड माइंड्स. नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स।

फ्रेरे, पाउलो (1970). पीड़ितों का शिक्षण शास्त्र. न्यूयॉर्क: कंटिन्यूअम।

पांडे, बी. बी. (2020). शैक्षिक एवं सामाजिक अनुसंधान. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।

सिंह, के. पी. (2018). उच्च शिक्षा में नवाचार और शिक्षक प्रशिक्षण. नई दिल्ली: शिक्षा प्रकाशन।

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली: भारत सरकार।

राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (2019). राज्य उच्च शिक्षा की स्थिति. नई दिल्ली: मानव संसाधन विकास मंत्रालय।

बिहार शिक्षा विभाग (2020). उच्च शिक्षा वार्षिक रिपोर्ट. पटना: बिहार सरकार।

एनसीईआरटी (2017). भारत में विद्यालय शिक्षा पर वार्षिक रिपोर्ट. नई दिल्ली: एनसीईआरटी।

यूनेस्को (2015). वैश्विक शिक्षा निगरानी रिपोर्ट. पेरिस: यूनेस्को।

यूनेस्को (2017). शिक्षक-प्रशिक्षण और 21वीं सदी की शिक्षा. पेरिस: यूनेस्को।